44 वर्ष | षष्ठम अंक | जनवरी 2022

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

519 वाँ सफलतम अंक

इस अंक में...

9 सम्पादकीय

11 राष्ट्रीय घटनाक्रम

16 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम

20 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य

29 नवीनतम सामान्य ज्ञान

35 राज्य समाचार

37 आस्ट्रेलिया पुरुषों के टी-20 विश्व कप (2021) का विजेता

38 खेलकूद

42 रोजगार समाचार

43 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

46 वर्षांत समीक्षा 2020 : संसदीय कार्य मंत्रालय

अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

49 **प्रखर कुमार सिंह**
टॉपर—सिविल सेवा परीक्षा, 2020 (29वाँ स्थान)

51 **गौरव कुमार यादव**
टॉपर—65वीं बिहार सिविल सेवा परीक्षा (63वाँ स्थान)

53 **सरीना आजाद**
टॉपर—बिहार सिविल सेवा परीक्षा

विविधा

55 स्मरणीय तथ्य

57 विश्व परिदृश्य

फोकस

62 (1) क्षेत्रीय विषमताओं के बीच जनांकिकीय उपलब्धियाँ : पाँचवाँ राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019-20

65 (2) आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (सीडीआरआई)

67 (3) हरित पथ की ओर अग्रसर भारत

69 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व

73 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

लेख

76 **आर्थिक लेख**—भारतीय बैंकिंग उद्योग की अद्यतन प्रवृत्तियाँ

80 **शैक्षिक लेख**—भारत में सम्पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य और चुनौतियाँ

82 **राजनीति विज्ञान लेख**—भारत के राष्ट्रपति का निर्वाचन कैसे होता है?

83 **सामाजिक लेख**—वर्तमान में लैंगिक भेदभाव मिटाने की चुनौती

85 **नारी-स्वास्थ्य लेख**—मातृत्व संरक्षण का कामयाब सफर

88 **धरोहरीय पर्यटन लेख**—राजस्थान में पारिस्थितिकीय पर्यटन : विकास और व्यूह-रचना

91 **कॅरियर लेख**—सिविल सेवा परीक्षा : यह समय है सार्थक गतिविधियों में संलग्न होने का

94 **शैक्षणिक लेख**—कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान ग्रामीण भारत में सरकारी विद्यालयों को प्राथमिकता

97 **ऊर्जा लेख**—प्राकृतिक गैस और इसकी चुनौतियाँ

99 **कृषि लेख**—खाद्य तेलों की बढ़ती कीमतें : कारण और निवारण

101 **सार संग्रह**

हल प्रश्न-पत्र

112 उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग पीसीएस/आरएफओ (प्रा.) परीक्षा, 2021

124 हरियाणा सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2021

134 एस.एस.सी. स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2020

160 राजस्थान पी.एस.सी. सब-इंस्पेक्टर पुलिस परीक्षा, 2021

मॉडल हल (वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान)

104 आगामी सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

144 आगामी 67वीं बीपीएससी संयुक्त (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

149 आगामी उत्तर प्रदेश असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

156 भारतीय अर्थव्यवस्था : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

151 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

154 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

165 अपना ज्ञान बढ़ाइए

166 क्या आप जानते हैं ?

श्रेष्ठतर प्रतिभागी

167 **प्रथम पुरस्कृत निबन्ध**—भारतीय लोकतंत्र में जातिवाद की गहरी पैठ

169 **प्रथम पुरस्कृत समीक्षा**—"समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु ऑनलाइन शिक्षा, पारम्परिक शिक्षा का स्थान नहीं ले सकती"

171 **निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक**—508 का परिणाम

अर्द्धवार्षिकांक

172 राष्ट्रीय घटनाक्रम

180 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम

185 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य

197 नवीनतम सामान्य ज्ञान

205 खेलकूद

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

सम्पादकीय

जीवन को नौका के समान बनाइए

Fools jump in where angels fear to tread, why ? The angels think before doing while fools do not.

हम लोग प्रायः भीड़ के रूप में व्यवहार करने के अभ्यस्त हो गए हैं. चुनावों में मतदान इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है. हम समूह के रूप में मतदान करते हैं, व्यक्ति के रूप में अपने विवेकानुसार मतदान करते हुए बहुत कम लोग देखे जाते हैं. यदि व्यापक रूप से विचार किया जाए, तो हम लकड़ी के उस लट्ठे की भाँति बहते हैं अथवा बहकते हैं, जो नदी या नाले की धारा के साथ बहता चला जाता है. चाहे जब किनारों से टकरा जाता है और चाहे जब झाड़-झंकाड़ों, सेवार में उलझ कर रह जाता है. उस लट्ठे को यदि नाव का रूप प्रदान कर दिया जाता है, तो फिर वह केवट या मल्लाह की इच्छानुसार यात्रा करती है. केवट भी पार जाता है और उसमें बैठने वाले अन्य लोग भी पार करते हैं. प्रवाह में बहने वाले लट्ठे रूपी व्यक्ति को यदि नाव का रूप दे दिया जाए, तो उसके व्यक्तित्व में कितना अन्तर आ जाए ?

हम भूल जाते हैं कि मनुष्य भगवान की सर्वोत्तम कृति है. प्रभु ने उसको लट्ठे के रूप में नहीं, नाव के रूप में बनाया है. दुर्भाग्य यह है कि उसका स्वामी विवेक सो जाता है. वह यदि जग जाए और अपने दायित्व के प्रति जागरूक हो जाए, तो वह भीड़ या जानवरों के समूह की भाँति व्यवहार न करके एक व्यक्ति अथवा यत्नपूर्वक बनाई गई नाव की तरह उसको और उसके साथियों को राह पर ले जाए.

हमारे युवा पाठक उच्च पदस्थ जनसेवक बनना चाहते हैं. हम चाहते हैं कि वे व्यक्ति की भाँति व्यवहार करने का अभ्यास करें. भविष्य में अवसर मिलने पर वे जनता की सेवा का लक्ष्य लेकर अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होने का संकल्प करें.

प्रकृति के वरदान विवेक की उपेक्षा करके व्यवहार करने का परिणाम आज हमारा पूरा देश भुगत रहा है. पद और पैसे के पीछे एक प्रकार की अन्धी-दौड़ देखने को मिलती है. हमारे उदीयमान युवक-युवतियाँ यदि विवेकपूर्ण व्यवहार करने लगें, तो हमारे व्यक्तिगत जीवन से लेकर राष्ट्रीय जीवन का स्वरूप ही बदल जाए. ऐसा करना उनके लिए अनिवार्य है, क्योंकि वे यदि अपने दायित्व के प्रति जागरूक नहीं बनेंगे, तो अराजकता एवं जंगल के राज्य को लाने के जिम्मेदार हो जाएंगे और उनका जीवन अपनी सार्थकता खो बैठेगा और इतिहास एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से वे अप्रासंगिक बन जाएंगे.